रात्रिक्लास 21/4/68 ओमशान्ति दैवी गुण धारण है?

यह नये बच्चे कहां आये हैं ? नशा चढ़ता है कि ईश्वरीय यूनिवर्सिटी में आये हैं। सारी यूनिवर्सिटी को फिरा कर पतित से पावन देवता बनाते हैं। यह समझते होंगे दिल में यह पुरानी दुनिया अभी बदल रही है। फिर नई दुनियां में देवताएं राज्य करेंगे। यहां ही मनुष्य से देवता बनने आये हैं। और सेकण्ड में। नई दुनिया की स्थापना करने वाले बेहद के बाप को जानने से ज़रूर उनके एडॉप्टेड बच्चे हो जावेंगे। लौकिक बाप को छोड़ पारलौकिक बन जावेंगे। एडॉप्ट बनने से विश्व की बादशाही मिलती है। अनुभव सुनाते हैं हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं तो ज़रूर स्वर्ग का वर्सा देते होंगे। बच्चे जानते हैं कि हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने आये हैं। भक्ति का फल भगवान क्या देते हैं? ज़रूर भक्ति के बाद सद्गति। सद्गति कहा जाता है सतयुग को। कलयुग में होती है दुर्गति। बाप है बेहद का। वह सर्व का सद्गति दाता है। जबकि सर्व की सद्गति दाता एक है, और तो हो न सके। वह सभी है भक्ति। जब तक सद्गति दाता को पहचाने। यह पण्डे पाण्डव ही बापदादा का परिचय दे सकते हैं। जब पक्का निश्चय हो तब ले आना चाहिए। कच्चे को नहीं ले आना है। ऐसे भी नहीं कच्चे को ले आने से पक्का हो जावेगा। नहीं। पक्का होगा तो समझेंगे स्वर्ग़ का वर्सा पक्का पावेंगे। स्वर्ग़ में है बादशाही। उसमें क्या पद पावें? नम्बरवार पद तो है ना। फर्स्ट क्लास राजाई, सेकण्ड क्लास साहूकार, थर्ड क्लास साहूकार। थर्ड क्लास को ग़रीब ही कहेंगे। फर्स्ट क्लास बहुत साहूकार, सेकण्ड क्लास है साधारण। बाप कहते हैं मैं भी साधारण तन में आता हूँ; क्योंकि नहीं तो बिगर पैसे सम्भाल कैसे सकेंगे? बाप ने रथ जो लिया है ड्रामा अनुसार नूँध है। इनको ही भाग्यशाली रथ बनाते हैं। यह है पहले नम्बर में भाग्यशाली। जिनमें मैं प्रवेश करता हूँ। 100% भाग्यशाली फिर दुर्भाग्यशाली बने। तो फिर उनमें प्रवेश करता हूँ। उन्हों को ही फिर भाग्यशाली बनना है। नज़दीक हुआ (ना) । यह बच्चे तो समझते होंगे बाबा क्या समझाते हैं। वह आत्माओं का बाप है, प्रजापिता ब्रह्मा है शरीरों का बाप। शिवबाबा नई रचना रचते हैं। तो ब्राह्मण हुये नई रचना। नई दुनियां वास्तव में ब्राह्मणों की है। सतयुग से भी। वर्णों को देखेंगे तो पहले चोटी। फिर देवता आते हैं। पूछेंगे देवता बड़ा या ब्राह्मण? कहेंगे ब्राह्मण बड़े। ब्राह्मण हैं संगमयुगी। इन्हों को भगवान पढ़ाते हैं। देवताओं को देवताएं पढ़ावेंगे। यह इतने बड़े हैं; परन्तु जानते नहीं हैं। गीता में भी ब्राह्मणों की बात है नहीं; क्योंकि गीता का भगवान ही देवता को लिख दिया है। तो ब्राह्मण को गुम कर दिये हैं। बाप ने राजयोग सिखाया ही है नर से नारायण बनने का, न कि कृष्ण। देवता कहां से आया? मनुष्य को देवता बाप ही बनाते हैं। बातें तो सहज हैं। फिर दैवी गुण भी धारण करनी है। तो मैं बतलाता हूँ कि मैं आया हूँ। अभी पावन बनने लिए विकारों पर जीत पहनो। काम विकार के कारण ही विघ्न पड़ते हैं। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं; क्योंकि तुम रावण का वर्सा (अपवित्रता) छुड़ाकर राम का वर्सा (पवित्रता) देते हो तो दुश्मन हो पड़ते हैं। उन्हों के लिए है अमृत का प्याला। बाप कहते हैं यह ज़हर का प्याला है। तो इसलिए झगड़ा करते हैं। कमाल ही नहीं देते। बाप तो भोला भण्डारी है; परन्तु जगह ही नहीं देते; क्योंकि रावण का वर्सा दू(छु)ड़ाते हो तो दुश्मन बनते हैं। बेहद के बाप का वर्सा है अमृत। वह हद के बाप का वर्सा देते हैं। और सतसंगों में यह बातें नहीं होती हैं। वहां जो सुनाते हैं वह सत्य–2 करते रहते हैं। कहना चाहिए तुम जो कुछ पढ़े हो, हम भी पढ़े हैं; इसलिए वह न सुनाओ। हम जो सुनाते हैं वह कब सतयुग से लेकर कलयुग तक सुनी ही नहीं है। संमगयुग पर हम बैठे हैं। ज्ञान सागर बाप ही बैठ हमको सुनाते हैं। वह सभी हैं भक्ति के सागर। बाप है सद्गति का सागर। ज्ञान सागर है ना। बाप जिस प्रकार समझाते हैं वह नोट करना है। रचयिता बाप को जानने से ही बेड़ा पार होता है अर्थात् शान्तिधाम फिर आवेंगे सुखधाम। यह पढ़ाई है नई दुनियां के लिए। याद (की) यात्रा शान्तिधाम के लिए है। 84 का चक्र सिखलाते हैं, वह है सुखधाम के लिए। जितनी ही अच्छी रीत समझें(गे) ,

समझावेंगे, पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। वह तो स्टूडेन्ट के हाथ है। टीचर को ऐसे नहीं कहा जाता कृपा , आर्शीवाद करो। पढ़ना है। तुम जानते हो कौन रेगुलर पढ़ते हैं, कौन ऐबसेंट होते हैं। ऐबसेंट एक दिन भी होंगे तो फिर वह वृद्धि हो जावेगी। चार्ट भी खराब हो जावेगा। क्वालीफिकेशन कम हो जावेगा। अच्छा, अभी अपन को आत्मा समझ बाप को लव से याद करो। बहुत ही प्यार से याद करना चाहिए। तुम भी बच्चे हो। यह भी बच्चा है। यह बहुत याद करता है। ऐसे नहीं कहते जल्दी स्वर्ग़ में भेजो। मैं तो आपके साथ ही रहूँ। फिर तो कब आपका साथ मिलेगा नहीं। फिर 5000 वर्ष बाद मिलेंगे। ऐसे–2 बाप को याद करो। माया घड़ी भुलाय देगी; परन्तु टाइम वेस्ट न करना चाहिए। बाप को याद करने से वर्सा और चक्र भी याद आवेगा। सारा मदार है याद पर। भक्ति में तो ढेर धक्के खाये हैं। अभी धक्के खाने की दरकार नहीं। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रही हुई प्वाइन्ट्सः–(24/4/68 प्रातःक्लास) सतयुग में एक राज्य है। कलियुग में अनेक राज्य है; इसलिए तुम पूछते भी हो नर्कवासी हो या स्वर्ग़वासी? परन्तु मनुष्य हैं जैसे बन्दर। पढ़ा और फेंक दिया। हम कहाँ है, यह भी समझते नहीं। यह है ही कांटों का जंगल। जंगल में जनावर रहते हैं। वह है फूलों का बगीचा। तो अभी फॉलो करो। . .....मदर और अनन्य बच्चों को। तब ऊँच बनेंगे। समझाते तो बहुत ही हैं। समझने वाले समझे। कोई तो सुनकर अच्छी रीत विचार–सागर–मंथन करते हैं। कोई तो सुना–अनसुना कर देते हैं। जहां–तहां लिखा हुआ है शिवबाबा याद है? तो वर्सा भी ज़रूर याद आवेगा। दैवी गुण होंगे तो देवता बनेंगे। अगर क्रोध, गुस्सा आदि आसुरी गुण होंगे तो ऊँच पद पा न सकेंगे। वहां तो भूत होते ही नहीं । रावण ही नहीं तो रावण की सेना ही कहां से आई? देह अहंकार, काम, क्रोध ..... यह है सबसे बड़े–2 भूत। उनको निकालने की कोशिश करनी चाहिए। भगवानुवाच इस भूत को निकालो। फिर भी निकालते नहीं। पुरुषार्थ ही नहीं करते भूतों को भगाने का। योगबल नहीं है। योगबल ही भूतों को भगावेगा। ज्ञान बल नहीं। योग में ही कमज़ोर हैं। सारा दिन देखते रहते हैं घूमने का शौक बहुत है। सर्विस का शौक नहीं। घूमने, धक्के खाने का शौक तो भक्तों को होता है। भूतों को भगाने का रास्ता एक ही है। बाप की याद से ही भूत भागते हैं। अच्छा ओम।

(22/4/68 प्रातःक्लास) कहते हैं हम बेहद के बाप को भूल जाते हैं। अरे, अज्ञान काल में कब ऐसे कहते थे हम लौकिक बाप को भूल जाते हैं। गटर में डालने वाले बाप को याद करते हो और उस गटर से निकालने वाले बाप को भूल जाते हो। बाप कहते हैं माया के तूफान भल कितना भी आवें ; परन्तु तुमको हिलना न है। महावीर बच्चे डरेंगे नहीं। किसम–3 के तूफान आवेंगे उनसे डरना न है। कर्म–इन्द्रियों से कर्म न करना है। माया बड़ी प्रबल है। कहते हैं बाबा पता नहीं क्या हो गया है? माया ने जादू लगा दिया है। तो बाप समझाते रहते हैं मीठे–2 बच्चों याद करो, कट निकल जावेंगे। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। उसके ऊपर कट कैसे चढ़ी है ख़्याल तो करो। इसको कहा जाता है कुदरत। आत्मा जो तमोप्रधान बनी है वह बाप की याद से सतोप्रधान बनेगी। बाप की याद बिगर और कोई उपाय है नहीं। अच्छा, ओम। यह ज्ञान बड़ा ही वण्डरफुल है। कोई की बुद्धि में मुश्किल ठहरता है। घड़ी–2 थक जाते हैं। राजाई लेना है तो श्रीमत पर पूरा चलना है। अपनी मत काम नहीं आवेगी। जीते जी वानप्रस्थ में जाना है तो सभी कुछ किसको देना पड़े? वारिस तो बनाना पड़े ना। भक्तिमार्ग में भी वारिस बनाते हैं; परन्तु अल्पकाल के लिए। यहां तो इनको वारिस (ब)नाना होता है जन्म–जन्मांतर के लिए। गायन भी है फॉलो फादर। जो फॉलो करते हैं वही पद पाते हैं। अच्छा, ओमशान्ति।